अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(कवि - परिचय)

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

★ खड़ीबोली के सर्वप्रथम मौलिक प्रबंधकाव्य के प्रणेता महाकवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं। साहित्य में बौद्धिक दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा और भाषा के नवीन रूप-विन्यास - इन सभी क्षेत्रों में हरिऔध जी अग्रणी हैं। निस्सन्देह उन्होंने आधुनिक साहित्य के सर्वतोमुखी विकास में असाधारण योगदान दिया है। रूढ़िवादी परिवार में जन्म लेकर भी वे हर नयी और अच्छी बात के लिए सदैव खुले रहे हैं।

अयोध्या सिंह उपाध्याय का जन्म आजमगढ़ जिले के निजामाबाद

तहसील में 15 अप्रैल, 1865 ई० को हुआ था। उनके पिता का नाम भोलासिंह उपाध्याय और माता का रूक्मिणी देवी था। हरिऔध जी कहते हैं कि उनके व्यक्तित्व के विकास में चाचा ब्रह्मासिंह उपाध्याय का सबसे अधिक योगदान रहा है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा - दीक्षा घर के अतिरिक्त एक स्थानीय मिडिल स्कूल में हुई। वहाँ की परीक्षा पास कर वे अंग्रेजी पढ़ने के लिए काशी के क्वींस कॉलेज में नामांकित किये गये, लेकिन दुर्बल स्वास्थ्य के कारण उनकी पढ़ाई नियमित रूप से नहीं हो पायी। इसके बाद उन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिन्दी और फारसी का ज्ञान प्राप्त किया। लगभग 17 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया। कुछ दिनों तक उन्होंने एक तहसीली स्कूल में अध्यापन - कार्य किया। इसी बीच उन्होंने नार्मल की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की। इसके बाद वे कानूनगोई की परीक्षा में सम्मिलित

हुए। सन् 1889 ई० में कानूनगो के रूप में उनकी नियुक्ति हो गयी। उन्होंने इस नौकरी में प्रोन्नति भी प्राप्त की। सरकारी नौकरी समाप्त होने के बाद वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के अवैतनिक प्राध्यापक हो गये, जहाँ उन्होंने सन् 1941 ई० तक बड़ी दक्षता से अध्यापन-कार्य सम्पन्न किया। वहाँ से अवकाश मिलने पर अपने जीवन के अंतिम छह वर्षों तक वे घर पर रहकर ही साहित्य-सेवा करते रहे। अपनी रचनाओं के कारण हरिऔध जी को साहित्य के क्षेत्र में काफी सम्मान प्राप्त हुआ। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में उन्हें सम्मेलन का सभापति बनाया गया और विद्यावाचस्पति की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। इनका निधन 6 मार्च, 1947 ई० को हुआ था।

— क्रमशः